अपनी कुल्हाड़ी
अपने पैर

अपनी कुल्हाड़ी अपने पैरपर

श्री सत्यनारायण भूत

मंत्री

महाराष्ट्र प्राकृतिक चिकित्सा परिषद, नागपुर

अपनी कुल्हाड़ी अपने पैरपर

ऐसा कौन होगा जो अपनी कुल्हाड़ीका उपयोग अपने ही नाशके लिए करेगा ? सही बात है, कहनेमें भी अटपटी है, और गलत भी है, ऐसा ही हमें महसूस होगा। परन्तु आप जरा सोचेंगे तो ऐसा ही सिद्ध होगा कि वास्तवमें हम ही अपना नाश कर रहे हैं। कुदरतको दोष देना गलत है। वह परमपिता परमेश्वर किसीका नाश नहीं करता और न किसीका बुरा ही करता है। वह तो सभी जीव-जन्तुसे लेकर मानव समाज तक सभीको मातापिता तुल्य संरक्षण देता है, और सबका भला ही करता है। इसलिए उसका नाम परमपिता है, दीन-दयालु है।

उसने इस संसारका निर्माण किया है और इसके लिए एक कानून बना दिया है। उस कानूनकी एक सीमा निर्धारित कर दी है, जिससे अपने आप (ॲटोमॅटिक) उसके सारे संसारका कार्य-चक्र चलता रहे। हमारी सरकारके कानून बने हैं, और उसके अमल करवानेके लिए प्रशासक नियुक्त किए हैं। कानूनका उल्लंघन करनेपर सजा देनेके लिए न्यायालय खोल रखे हैं। परन्तु परमपिता परमेश्वरने तो ऐसी व्यूहरचना बना रखी है कि, उसके कुदरतके कानूनका उल्लंघन करनेपर किसी न्यायालयमें जानेकी आवश्यकता नहीं है, न उसे सजा ही सुनानेकी जरूरत है। उसका सही या गलत परिणाम हमें ही स्वभावतः भुगतनेका तरीका बना दिया है। प्रथम एक बात हमें समझ लेना जरूरी है कि परमपिता परमेश्वरने इस सृष्टिके निर्माणमें इस बातका पूर्ण ध्यान रखा है कि, सृष्टिमें जिन-जिन वस्तुओंका निर्माण किया गया है, वह मानवके हितोंकी रक्षाका पूर्ण ध्यान रखकर ही किया है। उसकी लीला तथा उसकी महिमा अगाध है। हम ही ना समझीसे गलत मार्ग अपनाते हैं और

उसका नतीजा हमें ही भुगतना पड़ता है। फिर दोष तकदीरको देते हैं। जैसा करेगा बंदा वैसा ही फल पाएगा। यदि बबूलका पेड़ बोया गया है तो आम कहाँसे खानेको मिलेगा? यही सारी चीजें समझनेकी हैं। मैं कह रहा था कि, परमपिता परमेश्वरके बनाए नियमोंका उल्लंघन करनेसे उसका नतीजा कैसे भुगतना पड़ता है? इसके लिए हजारों उदाहरण हो सकते हैं। परन्तु विषय विस्तारित नहीं करूँगा। मान लीजिए हमने हमारे मकानके पास गुलाब, मोगरेके पौधे लगाए, तुलसीके पौधे लगाए। कुदरतका नियम है, आपने वह पौधे लगाए— कुदरत आपको सुगंध और शुद्ध हवा प्रदान करेगी। यदि आपने अपने घरके पानीको या एकत्रित किए गए कूड़े-कचरेको सड़ने दिया तो उससे गंदी हवा कुदरत पैदा करेगी, और आपका स्वास्थ्य बिगड़ेगा। फिर डॉक्टरोंके पास जाना पड़ेगा। घरमें अशान्ति फैलेगी और आप तकदीरको दोष देते रहेंगे। अच्छी चीज भी आपने निर्माण की थी, और बुरी चीज भी आपने ही निर्माण की है। कुदरतका नियम वहाँपर तुरन्त लागू हो जाता है, और उसका परिणाम हमें भुगतना पड़ता है। घरमें डी. डी. टी. का छिड़काव किया— छिपकली मर गई, चूहे मर गए, बिल्ली मर गई। कुदरतका सारा संतुलन ही बिगड़ गया।

वही हालत जंगलके वन-प्राणियोंकी भी हुई। हिरन, चीतें, शेर, गिद्ध आदि सैकड़ों प्राणी सारे खत्म हो गए। कुदरतने सारी सृष्टिका एक संतुलन बना दिया है, उस संतुलनको हमने बिगाड़ा तो स्वाभाविकतः उसकी सजा भी हमें ही भुगतनी पड़ती है। हमारे नेता लोग चटपट कह देते हैं कि, कुदरत हमें फसलके लिए, बरसातके लिए धोखा देती है। परन्तु दिएके अन्धें कभी यह नहीं सोचते कि कुदरतका धर्म तो रहम ही करना है। उसके सारे कार्य मानव भलाईके लिए ही होते हैं। हम कुदरतके नियमोंको तोड़-मोड़कर फेंक देते हैं और दोष कुदरतको देते हैं। कुदरतने हमें स्वस्थ रहनेके लिए नियम बना दिए हैं। यदि उनका उल्लंघन करते हैं तो हमें बीमार होना ही पड़ेगा और दुख भुगतना ही पड़ेगा। कुदरतका नियम है कि हम अपने जीवनको कैसे रखें। यदि उस नियमके अनुसार नहीं चलेंगे तो हमें दुख ही दुःख भुगतना पड़ेगा. . . जैसा कि आज भुगत रहे हैं। सैकड़ों तरहके, नाना प्रकारके रोगोंका निर्माण हो रहा है और निन्यानबे प्रतिशत मानव बीमार पाए जाते हैं। एक मानेमें

तो हम सभी बीमार हैं, और हम अपनी शान्ति खो चुके हैं। हम भोजनमें वह चीजें खाते हैं, जो कुदरतके नियमोंके विरुद्ध हैं। फिर स्वास्थ्य बिगड़ा, इसके लिए हमारी सरकार अन्धी बनी है। वह जनताकी भलाई करना चाहती है, परन्तु कर नहीं सकती। असमर्थ है, क्योंकि नेताओंको व्यापारियोंने तथा कारखानदारोंने खरीद रखा है। जनतामें इतनी बीमारी-रोगराई क्यों फैल रही है ? इसकी ओर सरकार कभी ध्यान नहीं देगी। वह तो बीमारियाँ आनेपर उनको दूर करनेका तरीका जनताको बताती है कि हम करोड़ों रुपयोंके खर्चसे तुम्हारे लिए डॉक्टरोंका निर्माण कर रहे हैं। करोड़ों रुपयोंकी औषधियोंका निर्माण कर रहे हैं। आप हमें खूब टैक्स देते रहें। हम सब यह आप ही की भलाईके लिए कर रहे हैं। जनता भोली है। उसे हजारों वर्षोंसे गुलामीकी आदतें पड़ गई हैं। लगातार अत्याचार सहन करनेकी आदत हो गई है। क्या सरकार हमें खानेकी शुद्ध वस्तुएँ नहीं दे सकती ? क्या गंदी वस्तुओंका निर्माण नहीं रोक सकती ? क्या वस्तुओंकी मिलावटोंको नहीं रोक सकती ? यह सब सरकार कर सकती है, किन्तु ऐसा करते वक्त सरकारी मशीनरीकी स्वार्थ-वृत्ति इसमें बाधक होती है।

स्वास्थ्य व शान्तिका नाश कैसे हो रहा है ?

मानव पुतला पाँच तत्वोंसे बना है।

प्रथम तत्व—हवा

मानवको शुद्ध हवा, (ऑक्सिजन युक्त, पोषक तत्वमय हवा) चाहिए, जिसका अभाव हम ही निर्माण कर रहे हैं। कैसे ?— परमपिता परमेश्वरने मानवको शुद्ध हवा मिले इसके लिए घने वृक्षोंका निर्माण किया है। फूलोंका निर्माण किया है। परन्तु हमने वनोंका नाश कर दिया है। जो करोड़ों अरबों रुपये खर्चके बाद भी फिरसे उसका निर्माण नहीं कर सकते। मैं गत तेरह वर्षोंसे लिख रहा हूँ, कई नेताओंसे प्रार्थना भी की। समाचार पत्रोंमें दिया, परंतु हमारा झुकाव गहरी खाई खोदनेकी ओर ही रहा। इन्सान रुपये, सोना, जवाहरका निर्माण कर उससे धनी बन सकता है, परंतु परमपिता परमेश्वरकी निर्मित वस्तुओंका नाश कर उसे हम निर्माण नहीं कर सकते। चाहे जितने

प्रयत्न करें, वह निर्माण नहीं हो सकेगा। सारे पर्वत उजाड़ हो गए। हर साल वन-महोत्सव मनाया जाता है। लाखों वृक्ष लगाए जाते हैं। परंतु नतीजा क्या आता है, सभी जानते हैं। जब मैदानोंमें हम वन सृष्टिका निर्माण नहीं कर सकते तो पहाड़ोंमें एकाध वृक्ष भी लगानेकी हमारी क्या ताकत होगी? पहाड़ोंमें भीषण गर्मी होनेके बावजूद भी वृक्ष अपने समयानुकूल हरे-भरे होते हैं। क्या आप उन्हें पानी देते हैं? क्या उन्हें खाद देते हैं? कुदरतकी महिमाही अजीब है। मैं हजारों मील महाराष्ट्रमें घूमा। सैंकड़ों मीलोंतक पहाड़ वृक्षोंके अभावसे शून्य हो रहे हैं। वे मानवको शाप दे रहे हैं। इसी तरह वन शाप दे रहे हैं। ऑक्सिजन युक्त व शुद्ध हवा मिलना भी बंद हो गई। बड़ी अजीब समस्या है। इंसानकी छोड़ी हुई गंदी हवा वृक्ष ग्रहण करते हैं व वृक्षों द्वारा छोड़ी हुई हवा इन्सान लेता है। कुदरतने एक दूसरेका कितना आपसी सम्बन्ध बनाया है? जिस तरह मातापिताका स्वाभाविक प्रेम अपने बच्चोंके लिए होता है, उसी तरह वृक्षोंके साथ या वन-सृष्टिके साथ इन्सानका होता है। परन्तु हमारे उन भाइयोंने जो सरकारकी मरजीसे वनोंका नाश कर रहे हैं, सारे समाजके सामने एक कठिन समस्या खड़ी कर दी है। हम स्वयं अपनी कुल्हाड़ीसे वनोंका नाश कर बीमारियोंमें फंस गए हैं और अपने आपको निराश्रित बना लिया है।

दूसरा तत्व—पानी

वनोंका नाश करनेके साथ-साथ हम शुद्ध पानीसे भी वंचित हो रहे हैं। जब बादल आते हैं तब वृक्ष उन्हें अपनी ओर आकर्षित करता है, और पानी बरसता है। बरसात होनेपर वृक्ष अपनी जड़ोंद्वारा पानीको रोककर रखता है। और जमीनमें पानीका स्तर बनाए रखता है। जमीनकी जलवायु समशीतोष्ण बनाए रखता है। पहाड़ोंमें घने वृक्ष रहनेसे उन वृक्षोंकी जड़ें पर्वतोंके गर्भमें पानीका संचय करती हैं। फिर पर्वतोंमें झरनोंका निर्माण होता है। वही झरनें आगे चल कर नदीका रूप लेते हैं। और नदी धरती मातापर बहती हुई,मानवके जीवनको सींचती हुई,अपने स्थानपर समुद्रमें जाकर मिल जाती है। किन्तु हमने पर्वतोंके वृक्षोंका सफाया किया और वे झरने भी बंद कर दिए, जिनके कारण हमारी आँखोंने झरनोंका रूप ले लिया है। यही हमारे सरकार

की नीति है। भगवान ही ऐसी सरकार तथा नेताओंसे बचाए। आज हम-सभी देखते हैं— धरती मातापर बहनेवाली नदियाँ जल्दी ही सूख जाती हैं। झरने जल्दी ही सूख जाते हैं। कुओंका पानी भी दिन प्रति दिन अधिकाधिक गहराइयोंमें जा रहा हैं। इन्साननेही कुदरतके नियमोंको तोड़ा है . . उसका नतीजा उसे भुगतना ही पड़ेगा !

तीसरा तत्व—मिट्टी

वृक्षोंका सफाया कर हमने तत्वमय जमीन का भी सफाया कर दिया है। वृक्षोंकी जड़ोंमें मानवके लिए पोषक कण रहते हैं। वृक्षोंकी जड़ोंमें जो पानी रहता है वही पानी कुओंमें झरना बनता है। और वही झरनोंका पानी ऊपरका हो या कुओंका हो जमीनमेंसे बहकर आता है, जो मानवको पोषकता, स्वास्थ्य प्रदान करता है। जहाँसे पानी बहता है वह जमीन भी वृक्षोंकी जड़ों द्वारा पोषक तत्वोंको पकड़ रखती है। गंगाका पानी हिमालयसे आता है। गंगा ही एक ऐसी नदी है, जिसके पानीमें अनेक दिनों तक कीटाणुओंका निर्माण नहीं होता। बाकी और भी अनेक ऐसी नदियाँ हैं जो हिमालयसे ही निकलती हैं, परंतु गंगाके पानीकी महिमा अलग ही है। क्योंकि, गंगा जिस भूभागसे बहती है उस जमीनपर ऐसे वृक्ष हैं जिनकी जड़ोंमें वह प्रभाव है, जिससे गंगाका पानी अनेक दिन रहनेके बावजूद भी उसमें कीटाणुका निर्माण नहीं होता ! यदि वे सारे वृक्ष साफ कर दिए गए तो गंगा भी अपना महत्व छोड़ देगी।

वृक्षोंके विनाशसे पहाड़ी इलाकोंकी मिट्टी बरसात होनेपर बहते हुए पानीके साथ अधिक बहकर आती है और नदी-नालोंमें बाढ़ आनेमें मदत देती है। वृक्षकी जड़ें मिट्टीको पकड़ रखती हैं और बहनेवाली मिट्टीको बहते जानेसे रोकती हैं। उसी तरह नदी-नालोंके किनारोंके वृक्ष साफ कर दिए जानेके कारण नदी-नाले अपनी सीमाएँ छोड़ आपत्ति बढ़ाए जा रहे हैं। मिट्टी भी इन्सानके लिए जीवनदायी है। उसीसे सारा मानव बना है। उसीकी वस्तुओंसे इन्सान पोषण पाता है। जमीनका उत्पन्न भी हम वनोंका नाश कर बढ़ा नहीं सकेंगे और न इन्सानकी पोषक तत्व पा सकेगा। वास्तवमें हम अपनी अपनी कुल्हाड़ी अपने पैर पर मार रहे हैं। इन्साननें खाद्योंमें भी स्वास्थ्य हानि-

आप अपने पैर पर कुल्हाड़ी क्यों मार रहे हैं ?
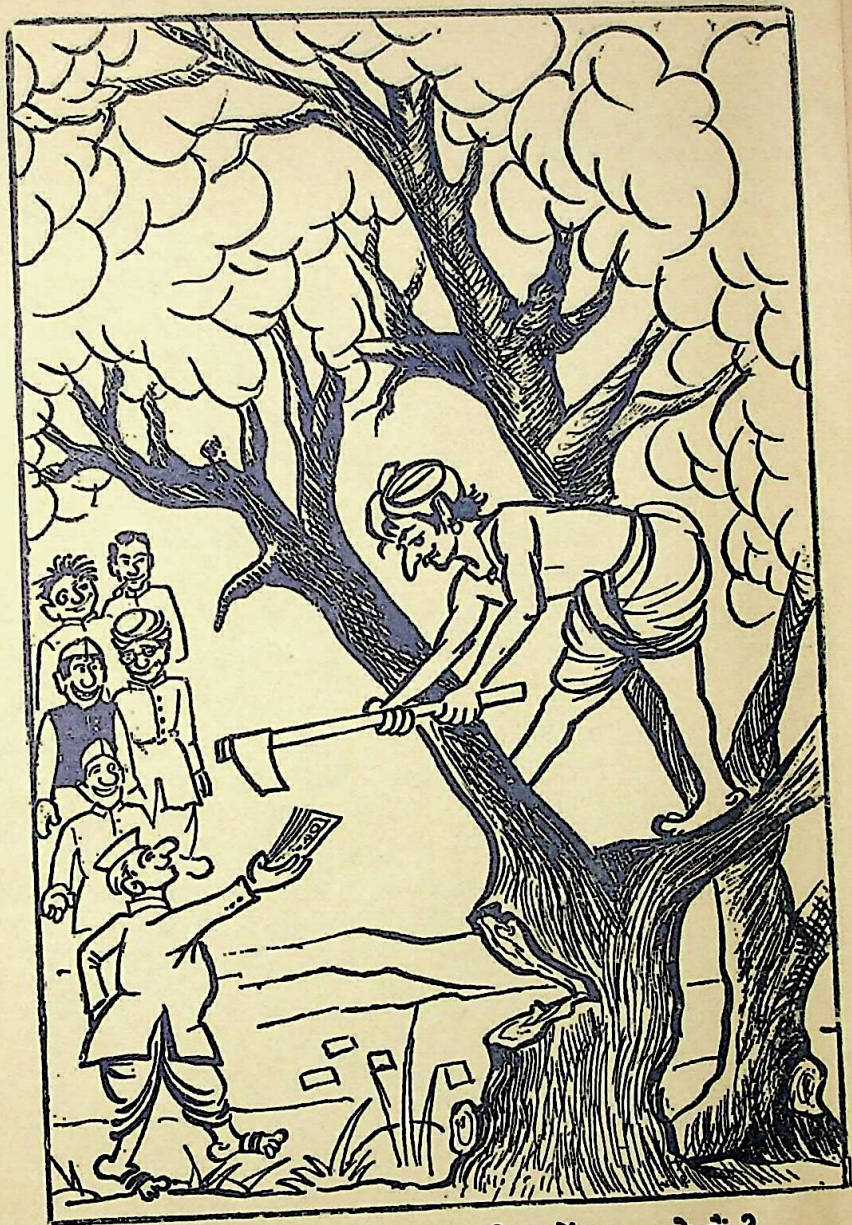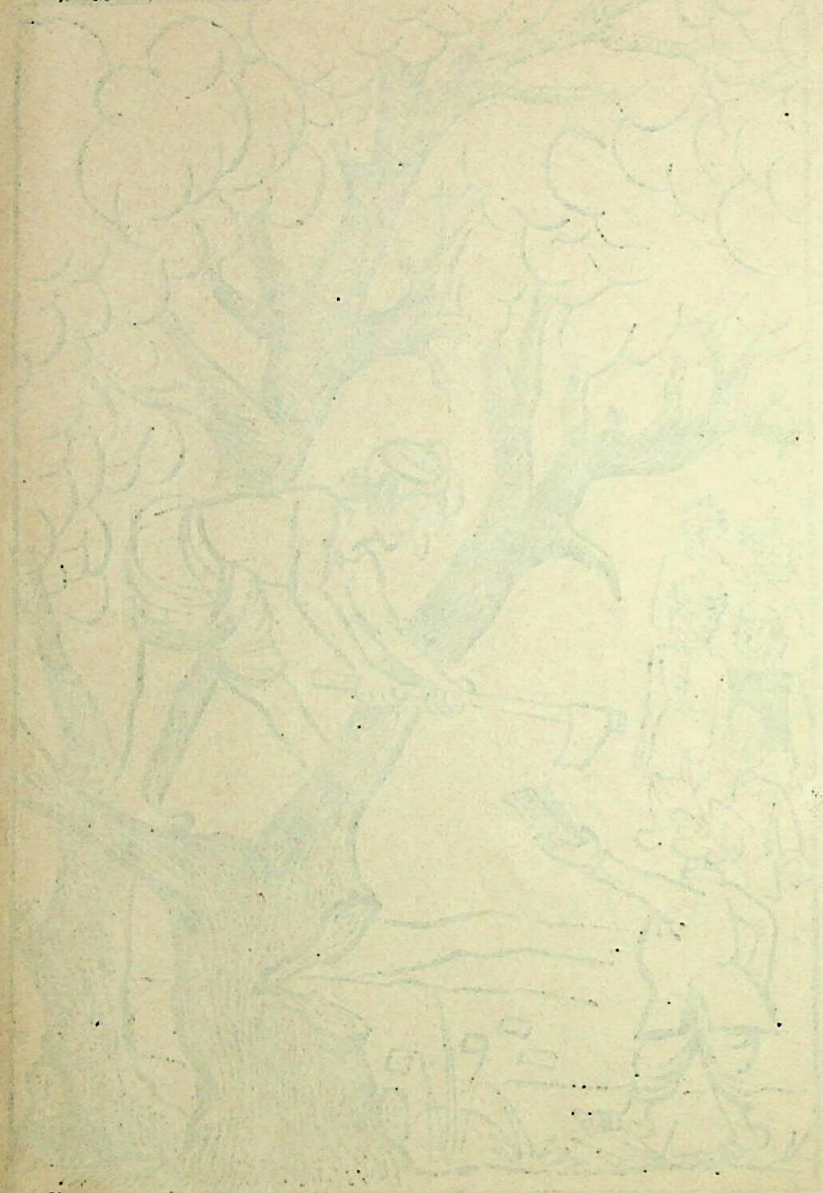
कारक पदार्थोंका निर्माण किया है। विषैले प्रयोगोंके प्रयासमें जमीनकी उर्वरा शक्ति व सारे स्वास्थ्यवर्धक तत्व दिन प्रति दिन नष्ट होते जा रहे हैं। इन्सान दिन प्रतिदिन अधिकाधिक दुर्बल बनता जा रहा है। पोषक तत्वोंके अभावमें उसकी ऊँचाई औसतन ४।। से ४।।। फीट तक आ गई है। छाती २६ से २८ इंच तक घट गई है। स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया है। बच्चे आए दिन विनाशकारी उपद्रव मचाते हैं। दिमागकी स्मरणशक्ति दिन-प्रति-दिन कमजोर होती जा रही है। दूरदर्शिता एवम् आपसी प्रेमभाव भी खत्म हो रहा है, क्योंकि जमीनके इन्सानको इन्सान बनानेवाले सभी पोषक तत्व खत्म हो रहे हैं। और मांसाहारी प्रवृत्ति तेजीसे बढ़ रही है। हजारों वर्षोंकी गुलामीके बावजूद भी भारत माँ की भूमिमें वह तेज बना था कि यहाँ रहनेवाले महान पुरुष व सही मानव देव तुल्य होते थे। परंतु हमने केवल २६ वर्षकी स्वतन्त्रताका ऐसा गैर उपयोग लिया कि अनंत कालसे भारत भूमिमें पाए जानेवाले तेजको निर्माण करनेवाले सारे पोषक तत्व ही भूमिसे खत्म कर दिए हैं। हम स्वयं अपनेको विनाशकी ओर लिए जा रहे हैं। पता नहीं भगवान हमें कब सद्बुद्धि देगा और भारत भूमिमें सुपुत्रोंका एवम् गांधी, तिलक, बुद्ध के समान महान पुरुषोंका फिरसे दर्शन कब होगा?

मनुष्य जैसा आहार लेगा वैसा ही उसका विचार होगा। वैसी ही उसकी बुद्धि होगी। उसीके मुताबिक भावी सन्तान की उत्पत्ति होगी। जब मिट्टीका पोषण तत्व खतम हो गया तब आहार भी वैसा ही होगा! थोड़ासा जो पोषक तत्व खाद्य पदार्थोंमें रहता है वह भी हमारे नेता तथा खाद्य पदार्थोंमें मिलावट करनेवाले व्यापारी भाइयोंके स्वार्थन्धतासे नाश हो जाता है। फिर भारतके लाल ओजस्वी, बलशाली, बुद्धिमान कैसे पैदा होंगे? भला बताइए कहीं डालडा खाकर, मैदेकी रोटी खाकर, विदेशी मिलो खाकर अच्छा स्वास्थ्य पा सकेंगे? हमारी सरकार विदेशी अनाज खिलाती है। फिर हमारी बुद्धि भी विदेशी ही बने, इसमें आश्चर्य नहीं। आज अमेरिकाकी मिट्टीसे पैदा हुए अनाजमें क्या गुण हैं? वहाँ ७५ प्रतिशत लड़कियोंको गुप्त रोग हो रहा है। हजारोंको मानसिक रोग हो रहा है। वहाँकी सभ्यता यहाँ तक पहुँच चुकी है कि लड़कियाँ वस्त्रविहीन होकर स्टेजोंपर नाचती हैं। हजारों तलाक हर सप्ताह होते हैं। वहाँके बच्चे १७–१८ सालकी उम्रमें ही माता पिताका उल्लंघन कर

कामवासनाओंमें ओतप्रोत होकर, बेधड़क एक दूसरेका चुंबन करते हुए सड़कोंपर घूमते हैं! वहाँ कामवासनाको भड़कानेवाली हजारों किताबें आए दिन बिकती हैं। स्त्री पुरुषका संभोग सिनेमा घरोंमें खुलेआम बतलाया जाता है। जहाँ सोना बरसता है, वहाँ चोर डाकुओंका, वेश्याओंका बोलबोला है। सिर्फ पैसा पैसा ही भगवान है। शान्ति कोसों दूर है। मानसिक रोग, व हृदयके रोग हजारों हो रहे हैं। वहाँकी सरकार भी चिन्तित है।

हमारे देशकी भी आज वही हालत होने जा रही है। वहाँकी मिट्टीका निर्जीव पोषण रहित खाद्य हमें दिया जा रहा है। और हमारी भारत भूमिमें उपजाया गया खाद्य दूसरोंको दिया जा रहा है भारत भूमिका पोषण युक्त खाद्य जब हमें नहीं मिलेगा तब हमारी भावी पीढ़ी कैसे तैयार होगी ? हमारे ऋषिमुनि, योगी, तपस्वी, महापुरुष कहते थे कि जैसा अनाज जिस घरका मिलेगा वैसा ही उनकी बुद्धि होगी। फिर हमारे भारतका अनाज दूसरोंको देना और विदेशी सत्वहीन अनाज हमें देना— इससे यह महसूस होता है कि हमने अपना सारा दिमाग विदेशियोंके चरणोंमें रख दिया है। उन्हींके हम अब भी गुलाम हैं। हमारे नेता हमें धोखा दे रहे हैं। हमारे जवान भारत माँ की रक्षाके लिए जब मैदानमें उतरते हैं तो नीचे झुककर वहीं भारत माँ की भूमिको प्रणाम करते हैं। उसकी मिट्टीको माथेपर लगाकर उसकी सौगंध खाते हैं कि हे माँ तेरी मिट्टीसे बना यह शरीर तेरी ही रक्षाके लिए अर्पण करता हूँ। और दुश्मन पर विजय पाकर ही लौटूंगा। कहाँ वह मिट्टी है ? कहाँ है वह आवाज ? देशके स्वार्थी लोगोंने मिट्टीका सारा तेज खत्म कर दिया है। भगवान हम सबको विवेक दे।

चौथा तथा पाँचवाँ तत्व--तेज व अवकाश

वन सृष्टि खत्म होनेसे यह दोनों चीजें ही खत्म हो गईं। बड़ी विचित्र बात है। बात सीधी सादी है। चारपाई है, उसका यदि एक पैर टूट जाए तो उस चारपाईका बैलेन्स कैसे रहेगा ? वह तो डगमगाएगी। उसी तरह प्रकृतिका (नेचरका) सारा कार्य बैलेन्ससे बना हुआ है। उसका बैलेन्स बिगड़ा तो सारा कार्य डगमगाएगा। मानवके आरामके लिए एवम् शोषणके

लिए जो निसर्ग नियमोंकी चारपाई वना दी है। यदि हमने उन नियमोंका वनसृष्टि रूपी एक पैर काट दिया तो मानव पोषणका आधार सारा डगमगाएगा। जमीन सूर्यनारायण द्वारा प्रथम तपाई जाती है। पश्चात् उसे शीतल भी कर दिया जाता है। सूर्यनारायण जमीनको प्रथम तपाता है, क्योंकि उसकी गंदगी तथा अनावश्यक कीटाणुओंका नाश हो। फिर परमपिता परमेश्वरने नियम वना रखा है कि, जमीन को तपानेका सूर्यका काम खत्म होते ही तुरन्त वरसात शुरू हो जाती है। और मानवोंको पोषक पदार्थ कंद, मूल, फल, अनाज निर्माण कर प्रदान करता है। यह परमपिता परमेश्वरका प्राकृतिक नियम है कि जमीन तैयार हो गई, उसकी शुद्धि हो गई कि उसे शीतलता प्रदान करनेके हेतु वर्षा होती है। परंतु वर्षाऋतु ही वृक्षोंके नाशके कारण खत्म हो रही है। भूमिको तेज तपनके वाद पानी की प्यास लगती है। इन्सानको जिस तरह तेज गरमीमें प्यास अधिक लगती है, उसी तरह धरती माता को भी पानी चाहिए। यदि धरती माँ की प्यास वुझानेका नियम मिट गया तो, प्यासे इन्सानकी जो हालत होगी वही हालत सर्व भारत भूमिकी होगी। सारा विनाश ही होगा! आज यही होने जा रहा है। कुदरतने तेजके लिए सूर्य वनाया है तो शीतलताके लिए चाँद वनाया है, क्योंकि समशीतोष्ण वातावरण पोषणदायक होता है। कुदरतके नियमोंको बाधा पहुँचाई कि हम विनाशकी ओर ढकेले जाएँगे। हमारा विनाश अटल होगा। शान्ति भंग होगी। कुदरतने तेजके लिए ग्रीष्म ऋतु, शीतलताके लिए वर्षाऋतु और पोषणके लिए जाड़ोंकी ऋतु वनाई है। उसके नियम अटल हैं। हमारे वैज्ञानिक कुदरतके नियमोंसे छेड़खानी करके दुनियाको विनाशकी ओर ले जा रहे हैं। जब मानवकी शान्ति खत्म हो जाएगी तो उसे अवकाश भी कैसे मिलेगा? आकाश तत्व भी अपना पोषणत्व समाप्त कर देगा। इस तरह मानव जो पाँच तत्वोंसे वना हुआ है, उन पाँचों तत्वोंके नियमोंको तोड़नेसे हमें कैसे सुख प्राप्त हो सकेगा? कैसे शान्ति पाएँगे हम? भगवान हमें कैसे पोषण-तत्व प्रदान करेगा? कैसी रक्षा करेगा?

इन्सान खुद ही खुदका विनाश किए जा रहा है। परमपिता परमेश्वर हमें सद्‌बुद्धि दे और इस संकटमय दिशासे हमें मोड़ दे! बचाए!

वनसृष्टिका नाश

अब मैं वनसृष्टिका कबसे और कैसे नाश तेजीसे बढ़ा, आपको बता रहा हूँ :—

(१) सन् १९४२ में महायुद्ध छिड़ा। उस समय युद्ध जब तक बंद नहीं हुआ, सरेआम वनोंका कत्लेआम होता रहा। हजारोंकी मिलिटरीके उपयोगके लिए लकड़ियोंका बेशुमार कत्लेआम किया गया।

(२) जब हमें १९४७ में स्वतन्त्रता मिली तब हमने ऐलान किया कि, मालगुजारी तथा इजारदारीके कक्षसे सभी जंगल अपने अधिकारमें ले लेंगे। किन्तु यह हमारे सरकारकी घोषणा, घोषणा मात्र थी। जंगलोंका अधिकार नहीं लिया गया। दिखावा मात्र किया गया। इधर मालगुजार इजारदारोंको इशारा था कि वे जंगलका कत्लेआम करें और पैसा बना लें। राष्ट्रकी चिन्ता नहीं थीं। इन दिनों मैं भी फारेस्टका कॉन्ट्रक्टर था। मुझे सारी हकीकत मालूम है। किन्तु उस वक्त मैं यह नहीं जान पाया कि, इसका नतीजा हमारे देशके लिए क्या होगा? हमारी भावी पीढ़ीपर इसका क्या असर पड़ेगा? मालगुजार इजारदारोंने इशारा पाते ही सारे जंगलोंका कत्लेआम किया। मैं आपको बता देना चाहता हूँ कि, जंगल काटनेका एक विशेष तरीका है। उसकी विशेष पद्धति है। यदि उस तरीकेसे वृक्षोंको नहीं काटा जाए तो वहाँकी वनसृष्टि फिरसे तैयार नहीं होगी। इस तरीकेसे काटनेसे कुछ मामूलीसा अधिक खर्च उठाना पड़ता है। आज भी जो वनसृष्टि सरकार द्वारा काटी जा रही है, वह उसी तरीकेसे काटी जाती है। और जो वृक्ष बढ़ने योग्य होते हैं या बीज उत्पादन योग्य होते हैं, उनको साफ नहीं किया जाता है। एक बार काटे हुए वृक्षको फिरसे साठ साल बाद ही काटा जाए यही नियम जंगल विभाग का बना हुआ है।

(३) मालगुजारी इजारदारीके लाखों एकड़के वन साफ होनेपर सरकारने केवल खाली जगहपर कब्जा किया! अजीब नाटक हुआ। वैसे ही हमें जमीन चाहिए इस आन्दोलनके दौरान हजारों एकड़ जंगलोंका सफाया किया गया। मैं कई जगह गया हूँ। ऐसे ऐसे बड़े सुन्दर वन थे, जहाँ अब खेती

सिर्फ ¼ भागमें ही हो सकती है। ¾ भूमि पहाड़ी पथरीली है। पटेल-पटवारी उच्च अधिकारियोंसे खेतीकी जगहके लिए उन वनोंकी जगहकी सिफारिश करते हैं, जहाँ वन अच्छे, सुन्दर मूल्यवान होते हैं। उन्हें खेती अच्छी या बुरी होगी इसकी परवाह नहीं। उन्हें तो वनोंको कटवाकर पैसा कैसे प्राप्त किया जाए इसी बातका ध्यान रहता है। मैंने इसके लिए कई बार शिकायत भी की थी। और इस तरह की लाखों रुपयोंकी चोरी भी पकड़वाई थी। किन्तु मेरे साथ ही दुर्व्यवहार हुआ। नुकसानके काम करनेवालोंको यही नतीजा भुगतना पड़ता है।

(४) हमारे बहुतसे फॉरेस्ट, रेव्हेन्यू डिपार्टमेन्टके अंतर्गत थे उनके पास उनकी सुरक्षाके लिए कोई इन्तजाम नहीं है। मैंने कई बार शिकायत की है, कि लकड़ीके दाम लगातार बढ़ते जा रहे हैं। चोर लोग हर जिलेमें जहाँ भी फॉरेस्ट होते हैं, हर महीने लाखों रुपएकी लकड़ी चोरी कर रहे हैं। और आज भी सरेआम जंगलोंमें चोरी चल रही है, ऐसा महसूस होता है। चोर लोग जब लकड़ीकी चोरी करते हैं तब यह नहीं देखते कि वृक्ष फिरसे तैयार होगा भी या नहीं। वह तो चोरीकी धुनमें उसका सफाया करता है। 'न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी' यह कहावत प्रसिद्ध है। जंगल भी साफ हो गए, खेती भी नहीं बढ़ी, न ही पैदावार बढ़ी। आज भी हजारों एकड़ भूमि ऐसी है, जिसमें अधिक उत्पन्न लिया जा सकता है। दुबारा फसल ली जा सकती है। जो मनुष्य जमीनमें अधिक उत्पन्न नहीं ले सकता, जो आलसी है, उसके पास खेती नहीं होना चाहिए। जो उत्पन्न राष्ट्रीय कोटके अनुसार लेनेको तैयार हों उसे उतनी जमीन तावेमें देनी चाहिए। उसका कोटा बाँध दिया जाना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है, तो जमीनका हक भी उसका न हो। सारी जमीन सरकारी हो। मालकी सिर्फ उत्पन्न लेनेवाले की ही हो। वह भी जिस साल उत्पन्न कम लिया हो और दूसरे साल भी उत्पन्न नहीं बढ़ाया, तो जमीन उससे लेकर दूसरेको दे देनी चाहिए। यदि उत्पन्न ठीक लेता हो तो उसे सम्मानित करना चाहिए। तरीका साफ हो। भेदभाव, भाई भतीजावाद न हो। राष्ट्रीयताका उद्देश हो।

(५) मालगुजारी समाप्त होनेके बाद खेतीके किनारोंपर कुछ कुछ जंगलोंके हिस्से मालगुजार, इजारदारोंके पास रह गए। बड़े बड़े कास्तकारोंके

पास रह् गए। उनके सहारे फॉरेस्टके जंगल निकासीके पास-बुक मिलकर, एवम् सरकारी हेमर माल निकासीके लिए प्राप्त कर, उसके सहारे हजारों वनोंका आए दिन सफाया किया गया है।

(६) इस तरह फॅक्टरियोंके लिए, गांवठाणोंके लिए, इलेक्ट्रिक लाइनोंके लिए, उद्योगोंके लिए लगनेवाली विभिन्न जातिके वृक्षोंका कत्लेआम किया गया है।

(७) सामुदायिक खेतीके नामपर हजारों वनोंका सफाया किया गया है। इस तरह अनेक उदाहरण हैं, जो आज हमारे भारतके वन वीरान हो गए हैं और वन्य-प्राणी भी खत्म हो गए हैं। पूरा भारत राजस्थान समान मरूभूमि नजर आ रहा है। कुदरतका संतुलन हमने बिगाड़ दिया है। क्या अभी भी हम सोए रहेंगे?

मेरी जनतासे नम्र प्रार्थना है कि सरकारको, नेताओंको छोड़ो। खुद समझो, करो। नहीं तो विनाश, खूनी क्रान्ति और अशान्ति अटल है।

आरोग्य मन्दिर, यवतमाल
२८-७-७२

मुद्रक : राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा